रिकॉर्ड :– नैनहीन को..... ओम् शान्ति। रूहानी बच्चों ने गीत सुना। किसने सुना? आत्मा ने। इस शरीर की कर्म–इन्द्रियों से अर्थात् कान से आत्मा ने सुना; क्योंकि संस्कार आत्मा में रहते हैं। आत्मा (ही) कहती है मैं एक शरीर छोड़ दूसरा लेता हूँ। एक शरीर वांढे का, एक शरीर मोची का। ऐसे एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। मनुष्यों को आत्मा का पता ना होने कारण देह–अभिमान होता है– मैं यह बनता हूँ, मैं बैरिस्टर हूँ, मैं फलाना हूँ। अभी तुम देही–अभिमानी बने हो। बाप बच्चों को समझाते हैं। बच्चे कौन हैं? प्रजापिता ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ। ..... आते ही प्रजापिता ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ हैं। कितने ढेर हैं। नए भी आते हैं। उनको पहले–2 समझाना (है)। बाहर में नाम ही लगा हुआ है ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ। ब्रह्मा को कहा जाता है प्रजापिता और निराकार (परम)पिता परमात्मा शिव है आत्माओं का पिता। आत्मा भी निराकार है और निराकारी दुनिया में रहनी वाली। उसको कहा जाता है शान्तिधाम। यह अच्छी रीति समझना है। तुम ब्रह्माकुमारियाँ (बि)गर कब कोई बेहद के (बाप) का परिचय दे ना सके। एक प्रजापिता ब्रह्मा। गाया भी जाता है परमपिता परमात्मा ने ब्रह्मा द्वारा सृष्टि रची। प्रजापिता ब्रह्मा हो गया साकार। तो सृष्टि किसने रची? निराकार ने। दो बाप .... ना। एक है निराकार परमपिता परमात्मा परे ते परे परमधाम में रहने वाला। तो यह आत्माओं को बाप .....ते हैं। वो हो गया (ज्ञान) का सागर, पतित–पावन। कलियुग में होते हैं सब पतित। सतयुग में होते हैं पावन। ..... ही पावन स्वर्ग। जिन्हों के यह चित्र रखे हुए हैं। अभी है कलियुग का अंत। फिर सतयुग होगा। यह तो ..... सहज है। भारत स्वर्ग था, भारत में रहने वाले स्वर्गवासी थे। अब वो ही जो स्वर्गवासी थे वो 84 जन्म .... अब नर्कवासी बने हैं। बाबा यह भारत की कहानी सुनाते हैं। तो निराकार शिव हुआ आत्माओं का (बाप) और प्रजापिता ब्रह्मा हुआ सर्व मनुष्य मात्र का बाप। बोर्ड भी लगा हुआ है– प्रजापिता ब्रह्माकुमारी। ब्रह्मा–विष्णु–शंकर यह तो हुए सूक्ष्मवतनवासी देवताएँ। उन्हों के ऊपर है शिव। गाते भी हैं ना ब्रह्मा (देवता) नमः, विष्णु देवता नमः... फिर कहते हैं शिव परमात्मा नमः सब आत्माओं का बाप है। वो है (पार)लौकिक बाप। उनको ही मनुष्य पुकारते हैं– हे पतित–पावन, हे परमपिता परमात्मा, हे दुखहर्ता, सुख कर्ता (अर्थात) दुख से लिबरेट कर सुख में ले जाते हैं। यह आत्मा ने पुकारा अपने ऑरगन्स द्वारा। हे परमपिता परमात्मा (हमको) दुख से लिबरेट करो और गाइड करो। हम अंधे की औलाद अंधे हैं। अपने घर को हम भूल गए हैं। कहते हैं हमको शान्ति चाहिए। आत्मा तो है ही शान्त स्वरूप। शान्तिधाम में रहने वाली। सब आत्माओं ..... है शान्तिधाम। यहाँ आत्मा आती है पार्ट बजाने। आत्मा में ही संस्कार रहते हैं। बाकी 84 लाख योनियाँ .....ना रॉंग है। पहले–2 यह समझना है कि यह ब्रह्माकुमारी है। तो सिद्ध हुआ इनका साकार बाप है प्रजा(पिता) ब्रह्मा और आत्माओं का बाप हुआ शिव। ब्रह्मा–विष्णु–शंकर भी उनके बच्चे हैं। गाया भी जाता है शिव(बाबा) ब्रह्मा द्वारा मनुष्य सृष्टि रचते हैं। विष्णु वा शंकर द्वारा नहीं। उन्हों को प्रजापिता नहीं कहा जाता। (प्रजापिता) ब्रह्मा के तो ढेर बच्चे हैं। बहुत सेन्टर्स हैं। आते ही हैं यहाँ ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ। अब ब्रह्मा (किस)का बच्चा? गाया भी जाता है सबका बाप एक शिव है। दो बाप हरेक को होते हैं। लौकिक और पारलौ(किक)। दुख के टाइम पारलौकिक बाप को ही याद करते हैं– हे पतित–पावन आओ। हम आत्माएँ जो पतित बन (गई) हैं उनको आय पावन बनाओ। बाप समझाते हैं तुम पतित बने हो। ज़रूर कब तुम पावन भी थे, जो कहते पतित से पावन बनाओ। बाप ने कोई पतित दुनिया तो नहीं रची। बाप तो आए भारत को स्वर्ग बनाते। बच्चों के लिए सौगात ले आते हैं। वो है सर्व का सद्गति दाता बाप। मनुष्य, मनुष्य की सद्गति कर (नहीं) सकते। सर्व का गति–सद्गति दाता एक है। उनको ही सतगुरू कहा जाता है। बाप आए कहते हैं मैं ..... . सच्चा बाप, सच्चा गुरु हूँ। तुम सबकी सद्गति करता हूँ। फिर मैं तुम्हारा टीचर भी हूँ। सृष्टि ... आदि–मध्य–अंत का राज़ तुम बच्चों को सुनाता हूँ अर्थात् त्रिकालदर्शी बनाता हूँ? मनुष्य

तो इस समय सब (नास्तिक) हैं। ना आत्मा को जानते हैं, ना परमात्मा को जानते हैं। कोई भी साधु–संत–महात्मा नहीं जानते। सब पतित हैं। कलियुग में सब पतित ही होते हैं। सतयुग में सब पावन होते हैं। एक भी पतित नहीं। स्वर्ग में मनुष्य भी थोड़े लाखों के अंदाज़ में होते हैं। अभी तो हैं करोड़ों के अंदाज़ में। सतयुग में बिल्कुल थोड़े मनुष्य। कलियुग में अथाह मनुष्य। बाप जब आए नई दुनिया बनाते हैं तो इतनी सब आत्माएँ कहाँ चली जाती हैं सो भी समझना है। बाप जो लिबरेटर, गाइड है, वो आते ही कलियुग और सतयुग के बीच में। पतितों को पावन बनाए आ(कर) सब आत्माओं का हिसाब–किताब चुक्तू कराते हैं। सब आत्मा को वापिस ले जाते हैं। सामने विनाश भी खड़ा है। तुम बाप से बेहद का वर्सा लेने लिए प्रजापिता ब्रह्मा (की) संतान बने हो। परमपिता परमात्मा शिव से बेहद का वर्सा लेने लिए प्रजापिता ब्रह्मा के संतान (बने) हो। परमपिता परमात्मा शिव से बेहद का वर्सा पाने आए हो। तुम पहले सतोप्रधान थे फिर सतो–रजो–तमो में आए हो। खाद पड़ गई है। सतयुग में ही गोल्डन एज्ड, फिर सिलवर एज, चाँदी की खाद पड़ी। अब तो पतित आत्मा बन गई हो। भारत की ही बात है। भारत में एक ही धर्म था। बाकी सब धर्म पीछे आए हैं। इस्लामी, बौद्धी, क्रिश्चियन आदि सब बाद में आए हैं। इनसे पहले सिर्फ भारत ही था। सूर्यवंशी लक्ष्मी–नारायण का राज्य था विश्व के ऊपर। लक्ष्मी–नारायण और उनकी डिनायस्टी का राज्य था। वहाँ दुख का नाम–निशान नहीं था। स्वर्ग का रचता है बाप। आप(बाप) तो सदैव सुख ही देने वाला है। फिर द्वापर–कलियुग में कहा जाता है रावण का राज्य। पाँच विकारों रूपी रावण है ना। इन लक्ष्मी–नारायण आदि देवताओं में 5 विकार नहीं थे। उन्हों को सम्पूर्ण निर्विकारी कहते हैं। स्वर्ग के मालिक थे। फिर उन्हों को ही 84 जन्म भोगने पड़ते हैं। 84 का चक्कर ... ना। सतयुग–त्रेता के बाद फिर है द्वापर–कलियुग। अभी है संगम। मौत सामने खड़ा है। यह वो ही महाभारी महाभारत लड़ाई है, जो आज से 5000 वर्ष पहले लगी थी, जबकि भगवान ने आकर राजयोग सिखाया था। (तुम) ब्रह्माकुमारियाँ राजयोग सीख रही हो फिर स्वर्ग के महाराजन–महारानी बनने। यह कोई कॉमन सतसंग नहीं है। रूहानी बाप आते हैं पढ़ाने। सब प्रजापिता ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ हैं। प्रजापिता तो साधारण है ... । अब उनके तुम बच्चे (बने) हो। तुम बाबा–2 करते रहते हो। अच्छा, ब्रह्मा किसका बच्चा? शिवबाबा का। तुम शिवबाबा (से) वर्सा लेने आए हो। वो है नई दुनिया स्वर्ग का रचता, पतित को पावन करता। पतित कहा ... जाता है नर्कवासी को। तुमको बाप कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहते पवित्र रहना है। इसको मृत्युलोक अथवा नर्क का अंतिम जन्म कहा जाता है। सब विषय सागर में (गो)ते खाते रहते हैं। जन्म लेते ही हैं विख (से)। बाप ने भी कहा है काम महाशत्रु है। यह तुमको आदि–मध्य–अंत दुख देते हैं। शिव भगवानुवाच्य (वो) है निराकार। उनकी ही महिमा है। शिवबाबा ज्ञान का सागर, पतित–पावन, शान्ति का सागर, पवित्रता का सागर। वह है बाप की महिमा। कृष्ण अथवा लक्ष्मी–नारायण की महिमा अलग है। यह भी समझाया हुआ है (यहाँ) कोई भी पतित को आने का हुकुम नहीं है, जब तक पवित्रता की प्रतिज्ञा ना करे कि हे बाबा, हम पवित्र ज़रूर बनेंगे। हम पुकारते थे पतित–पावन बाबा आओ। सो आप आए हो, हमको प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा पावन बना रहे हैं। हम पावन बन पवित्र दुनिया स्वर्ग का वर्सा अवश्य देंगे(लेंगे)। पहले तो यह पूछना चाहिए कि तुम ब्रह्माकुमारी क्यों कहलाती हो? सन शोज़ फादर। (फादर) शोज़ सन। बाप बच्चों को समझाते हैं, बच्चे फिर औरों को समझावेंगे। तुम बच्चे ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ बने हो। तो बाप आत्माओं को समझाते हैं। आत्माएँ सब ब्रदर्स हैं। किसके बच्चे हैं? शिवबाबा के। फिर हैं ब्रदर्स–सिस्टर्स। वो फिर ठहरे प्रजापिता (ब्रह्मा) के। इस समय तुम जानते हो हम आत्माएँ शिवबाबा के बच्चे सब ब्रदर्स हैं। तो वर्सा ..... बाप से सबको मिलता है। भाई से वर्सा मिल ना सके। गाया भी जाता है सर्व का सद्गति (दाता) एक बाप है। तो बाकी सब दुर्गति में हैं ना। साधु–संत, ऋषि–मुनि आदि सब पतित हैं।

बाबा आकर समझाते हैं। वो लोग गाते रहते हैं पतित–पावनी गंगा है। त्रिवेणी है ..... अगर गंगा पतित–पावनी है तो फिर यह क्यों गाते हैं कि हे पतित–पावन सर्व का सद्गति दाता। वो सद्गति दाता है कि गंगा? अगर गंगा है तो साधु लोग पतित–पावन तो नहीं ठहरे। गुरु लोग भी जिज्ञासुओं को लेकर स्नान करने जाते हैं। तो इससे सिद्ध है गुरु लोग पतित–पावन सद्गति दाता नहीं हैं। मनुष्य पत्थर बुद्धि होने कारण समझ नहीं सकते। जबकि पतित–पावनी गंगा है तो वहाँ आपे ही जाए स्नान करें ना। गुरुओं के साथ जाए स्नान करना तो फालतू है। कोई भी जाए स्नान कर और पावन हो जावे। ऐसे तो नहीं कि खास दिन पर गंगा पतित–पावनी होती है। गंगा में तो बहुत स्नान करते हैं। बड़ा मेला लगता है। मनुष्यों को तो कुछ भी पता नहीं है। पतित–पावन है ही एक बाप? फिर गुरु करने की क्या दरकार है। साथ तो ले नहीं जा सकते। फालोअर्स को छोड़ खुद मर जाते हैं। बाप समझाते हैं अब बीती सो बीती। वो सब है भक्ति दुर्गति। गाते भी हैं पतित–पावन आओ। आकर राम राज्य स्थापन करो; परन्तु राम राज्य किसको कहा जाता है यह किसको पता नहीं है। इस समय मनुष्य हैं अंधे की औलाद अंधे, बुद्धिहीन; क्योंकि बाप को ही नहीं जानते। (ओ) गॉड फादर कहते हैं; परन्तु वो कब आते हैं, क्या आकर करते हैं, यह कोई मनुष्य नहीं जानते। (अब) तुम बाप को जानते हो। बेहद का बाप मोस्ट बिलवेड है। आकर स्वर्ग रच स्वर्ग का वर्सा देते हैं। ..... तुम आते ही हो पवित्र बनने। आत्मा प्रतिज्ञा करती है। संस्कार तो आत्मा में ही रहते हैं ना। शरीर तो ..... हो जाता है। आत्मा एक शरीर छोड़ जाय दूसरा लेती है। इस जन्म में बैरिस्टर है तो दूसरे जन्म में भी (बैरिस्टर) थोड़े ही बनेगी। दूसरे जन्म में फिर कुछ और बनेगी। आत्मा संस्कार ले जाती है उस अनुसार जन्म लेती। आत्मा ही दुख–सुख भोगती है। इस समय सब आत्माएँ पतित हैं। सतयुग को पावन दुनिया कहा जाता है। (पतित) दुनिया में एक भी पावन हो नहीं सकता। गोया पतित मनुष्यों को ही गुरु करते हैं। बाप कहते हैं मैं (तुम)को 21 जन्म लिए पावन बनाता हूँ। अभी रावण का राज्य है ना। रावण को 10 भुजाएँ दिखाते हैं। विष्णु को 4 भुजाएँ दिखाते हैं। दो भुजा लक्ष्मी कीं, दो भुजा नारायण कीं; परन्तु यह किसको पता नहीं है; क्योंकि पत्थर बुद्धि हैं। सब पतित हैं। कलियुग में हैं पतित पत्थर बुद्धि। सतयुग में हैं पावन पारस बुद्धि। पारस (बुद्धि) बाप ही बना सकते हैं। साधु–संत, ऋषि–मुनि आदि सब कहते हैं हम रचता और रचना को नहीं जानते। बाप कहते हैं मेरे द्वारा ही तुम (मुझ) रचता और रचना के आदि–मध्य–अंत को जान सकते हो। सतयुग से लेकर कलियुग तक तुम कैसे 84 जन्म लेते हो यह अभी तुम जानते हो। 84 जन्मों का चक्कर तुम ही लगाते रहते हो। इनका एण्ड नहीं होता। 84 लाख जन्म नहीं हैं, 84 जन्म हैं। बुद्धि भी काम करती है। सतयुग में पहले जो आते हैं वो ही पूरे 84 जन्म लेते हैं। बाप भी तुमको 84 जन्मों का ही अंत देते हैं। तुम ही पूज्य देवता थे, फिर तुम क्षत्रिय, वैश्य... बने हो। भारतवासी जो स्वर्ग में थे अब नर्क में हैं। तुम जानते हो पहले नम्बर में पावन लक्ष्मी–नारायण जो थे वो ही फिर पहले नम्बर में पतित बने हैं। बाप कहते हैं मैं इनमें (आता) हूँ। वो बनते हैं ब्रह्मा–सरस्वती, जिनको जगतअम्बा–जगतपिता कहा जाता है। यह ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ हैं। वर्सा कहाँ से मिलता है? भगवान है स्वर्ग का रचता। उससे तुम वर्सा ले रहे हो। इसको कहा जाता है डाडे का वर्सा बाप द्वारा। शिवबाबा से तुम वर्सा लेते हो स्वर्ग की बादशाही। गाया भी जाता है परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा आदि सनातन सतयुगी देवी–देवता धर्म स्थापन करते हैं। फिर शंकर द्वारा अभी सब धर्म विनाश हो जावेंगे। सतयुग में इन लक्ष्मी–नारायण का राज्य है तो दूसरा कोई राज्य नहीं होता। अभी वो आदि सनातन देवी–देवता धर्म प्रायःलोप हो गया है। सिर्फ चित्र रहे ...। एक भी मनुष्य नहीं जो अपन को देवी–देवता धर्म का समझे। पतित होने कारण अपन को देवी–(देवता) बदले हिन्दू कह देते। हिन्दू और हिन्दवाणी। उनमें भी फिर कोई कहते हैं हम आर्यसमाजी

हैं। कोई कहेंगे हम गुजराती हैं, फलाना हैं। अब वह तो समझा ऊँच ते ऊँच शिवबाबा। उनकी महिमा भी गाते हैं तुम मात–पिता... तुम्हारी कृपा से सुख घनेरे। अब हम दुख घनेरे में हैं। आप ही आए हमको स्वर्ग का मालिक बनाते हो। अभी तुम बन रहे हो। 21 जन्म फिर कब दुख का नाम नहीं रहेगा। अभी तो है ही बिच्छू–टिंडन की दुनिया। एक/दो को खाते रहते हैं। हिंसा करते रहते हैं। एक/दो पर काम–कटारी चलाते रहते, जिससे ही पतित बने हैं। इसलिए बाप कहते हैं यह काम महाशत्रु है। इसने तुमको आदि–मध्य–अंत दुख दिया है। अब इन पर जीत पानी है अर्थात् पवित्र बनना है। यहाँ जो भी आते हैं प्रतिज्ञा कर आते हैं– बाबा, हम यह अन्तिम जन्म पवित्र बनेंगे; क्योंकि विनाश सामने खड़ा है। मृत्युलोक अब मुर्दाबाद होता है। .....के लिए यह लड़ाई सामने खड़ी है। बाबा हम प्रतिज्ञा करते हैं हम पवित्र बन पवित्र सुख का वर्सा लेंगे 21 जन्मों का। जो प्रतिज्ञा नहीं करते उनको यहाँ आए बैठने का हुकुम भी नहीं है। तुम हो गए हंस। वो बगुले। गुरुनानक ने भी कहा है मूत पलीती कपड़ धोए। बाप की महिमा गाई हुई है। अब बाप कहते हैं मनमनाभव। मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप भस्म हो (जावेंगे)। बाप और वर्से को याद करो। बच्चा पैदा हुआ, बाप मिला और वर्सा मिला। अब बाप कहते हैं तुम मुझे याद करो तो खाद भस्म होगी। इसको कहा जाता है योगाग्नि। योग से ही आत्मा प्युअर होगी। अगर प्युअर ना होगी तो सज़ाएँ खानी पड़ेगी। अगर योगबल से (विकर्म) विनाश करेंगे तो विश्व के मालिक बनेंगे। तो यहाँ आए हो विश्व का मालिक बनने। पाप भस्म होने .... और कोई उपाय नहीं है। बाप कहते हैं अब जज करो मैं राइट हूँ? पतित–पावन मैं हूँ वा गंगा पतित–पावनी है, जो पानी के सागर से निकली है। गंगा में स्नान करने कितने लाखों जाते हैं; परन्तु पानी से कोई थोड़े ही पावन बन सकता। यह है भक्ति दुर्गतिमार्ग। गाया भी जाता है भक्तों की रक्षा भगवान आकर करता है। अब भक्ति मुर्दाबाद होता है। सर्व का सद्गति दाता एक (बाप) है। तुम एक बाप के बच्चे हो। बाप कहते हैं मैं साधुओं का भी उद्धार करने आता हूँ। पतित ज़रूर पतित ही बनावेंगे। वो भक्ति के कलियुगी गुरु हैं। (मैं) आय पावन बनाता हूँ। मैं हर 5000 वर्ष बाद आता हूँ, जबकि कलियुग का अंत, सतयुग की आदि होती। यह है संगम का सुहावना युग। युगे–2 मैं नहीं आता हूँ। व्यास ने कितने झूठे शास्त्र बनाय हैं। गीता भागवत, रामायण आदि सब हैं झूठ। सच की रत्ती नहीं। इसलिए गाया जाता है झूठी माया...। व्यास जिसको भगवान कहते हैं, कितने झूठे शास्त्र बनाए हैं। शास्त्र सब हैं भक्ति के। उनको इस ज्ञान का (क्या) पता। रचता और रचना के आदि–मध्य–अंत का ज्ञान तुमको मिलता है, जिससे तुम देवी–देवता बन जाते हो। तुम ब्राह्मण ही ..... त्रिकालदर्शी बनते हो। फिर स्वर्ग के मालिक बनने हो। यह कोई गामतू सतसंग नहीं है। यह बाप समझाते हैं। सन्यासी आदि कोई भी सद्गति नहीं कर सकते। सतयुग के बाद सीढ़ी नीचे ही उतरते आते हो। सतयुग (से नीचे) कलियुग में गिरना ही है। फिर अंत में बाप आय सबकी सद्गति करते हैं। यह समझेंगे वो ही जो पूरी प्रतिज्ञा करेंगे। पवित्र ही समझ सकेंगे। पतित बना तो फिर नॉलेज सारी उड़ जावेगी। बाप को याद करे, सोने (का) बर्तन हो तब धारणा हो सके। फिर अगर विकार में जाए और काला मुँह किया तो बाप कहते हैं (मेहनत) है। ब्राह्मण कुल को कलंकित कर दिया, फिर 12 मास लिए तो कब मुँह ना दिखाना। विकार में जाने (वाला), काला मुँह करने वाला यहाँ बैठ ना सके। उनको बड़ी कड़ी सज़ा मिलती है। (12) मास, डेढ़ वर्ष पवित्र (रहे) तब यहाँ आय (सकते) हैं। गुरु लोग तो ऐसे कहते नहीं। खुद सन्यासी, उनके फालोअर्स गृहस्थी टट्टू, फिर फॉलोअर कहना तो झूठ है। बाप कहते हैं मैं एक ही सतगुरु तुमको सद्गति देता हूँ। बाकी भक्तिमार्ग (में) जो भी गुरु हैं वो दुर्गति में ले जाते हैं। अब सद्गुरु मिला है तो इन कलियुगी गुरुओं को छोड़ो। (उनका) उद्धार भी अब तुमको करना है। यह है हंस मण्डली। मूत पीने वाले विकारी इकट्ठे रह ना सके। (इस)लिए कोई को भी अलाउ नहीं किया जाता। अच्छा, मात–पिता, बाप–दादा का यादप्यार। ओम।